सिद्धार्थ और हंस

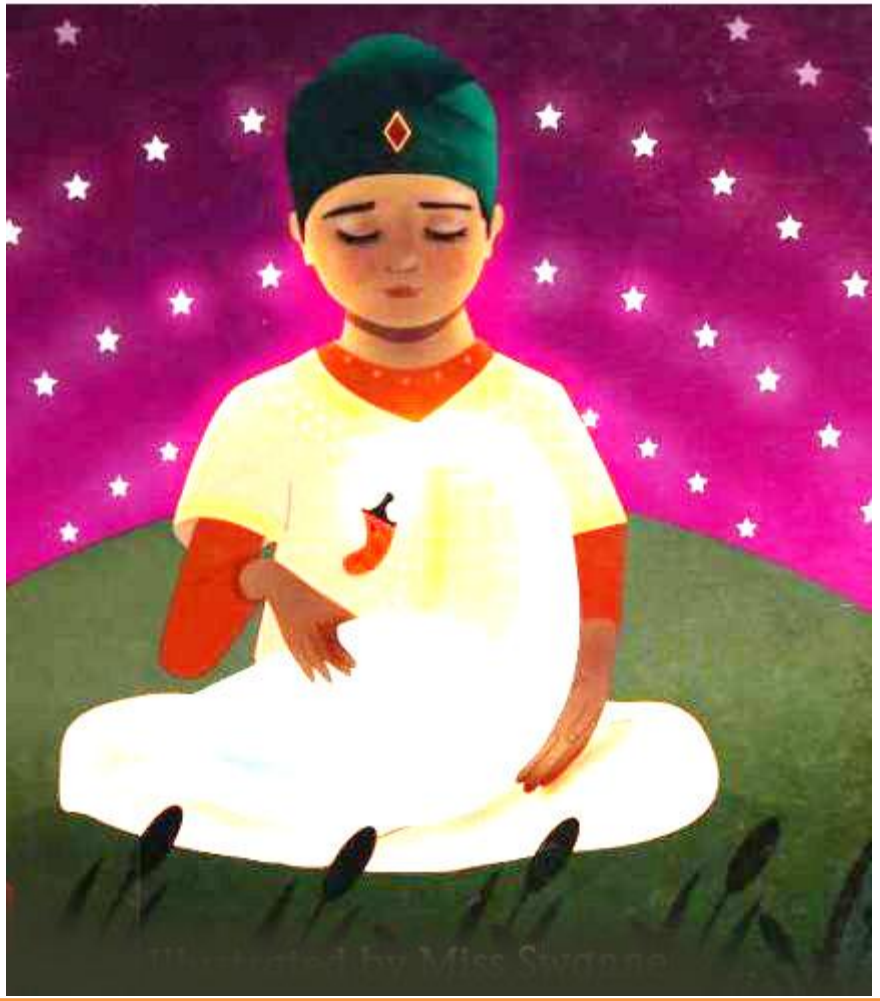

अध्याय 1

गर्मी के दिनों में वसंत की शाम थी. राजकुमार सिद्धार्थ महल में झील के पास टहल रहे थे. तब उन्हें एक अजीब, तेज आवाज सुनाई दी.

राजकुमार ने आकाश में देखा. उन्होंने आसमान में तीन सफेद हंसों को उड़ते हुए देखा. हंसों को देखकर उनका हृदय आनंद से भर गया.

अचानक, उनमें से एक हंस के गले से एक भयानक चीख निकली. उस हंस ने अपने पंखों को फड़फड़ाना बंद कर दिया.

वो बेचारा हंस जमीन पर गिर पड़ा.

किसी ने हंस को मार डाला था!

अध्याय दो

राजकुमार गिरे हुए पक्षी को खोजने के लिए दौड़ा.

हंस बहुत दर्द में था. वो घास पर लेटकर रो रहा था. उसके कंधे में एक तीर घुसा था.

"इतने सुंदर हंस को कौन गोली मार सकता है?" राजकुमार सिद्धार्थ रोया. उसे बहुत दुःख हुआ. वो अब क्या कर सकता था?

राजकुमार सिद्धार्थ ने नीचे झुककर हंस के नरम पंखों को सहलाया.

"मैं भी पिछले जन्म में एक हंस ही था!" उसने पक्षी से कहा.

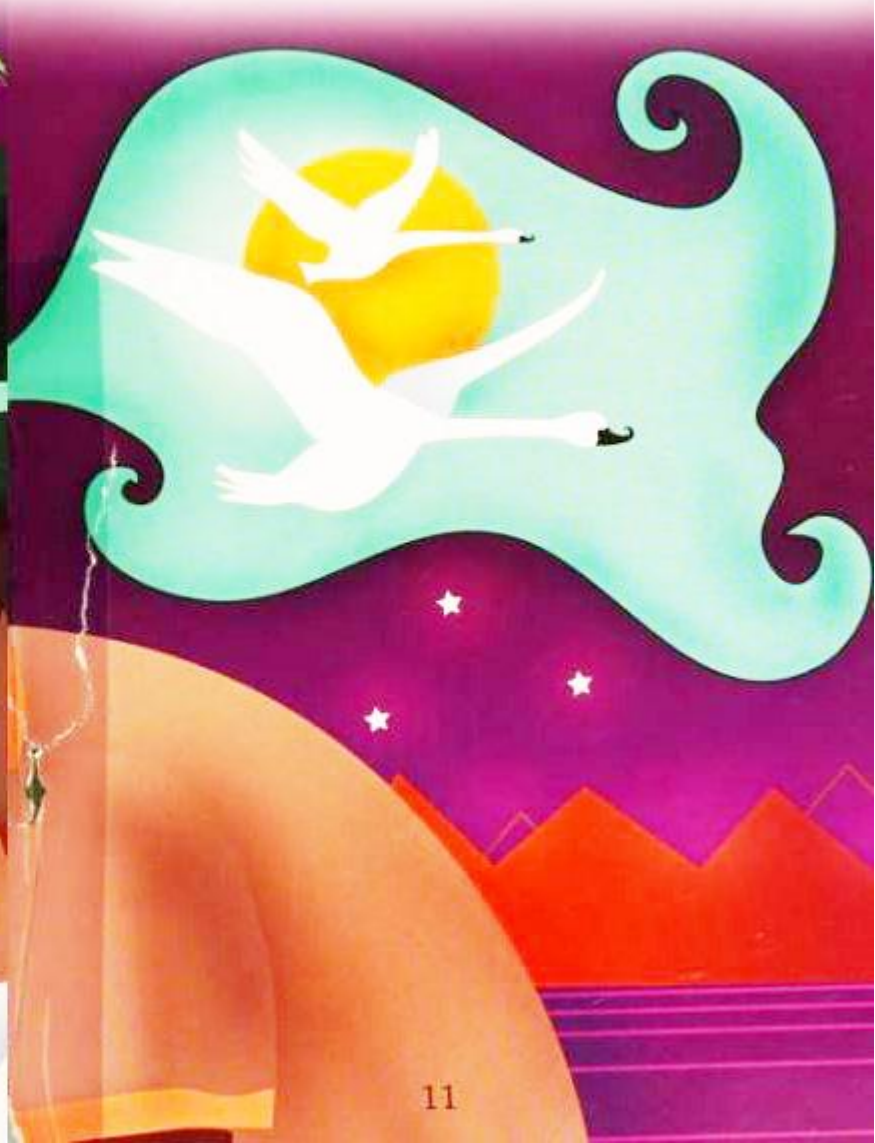

"तुम डरो मत. मैं सिर्फ तुम्हारी मदद करना चाहता हूं."

जल्द ही हंस शांत हो गया.

फिर राजकुमार झुका और उसने धीरे से तीर को बाहर निकाला. फिर गर्म रखने के लिए उसने अपनी कमीज को हंस के चारों ओर लपेट दिया.

अध्याय 3

फिर कोई जोर से चिल्लाया. "वो कहाँ है?"

वो देवदत्त, राजकुमार सिद्धार्थ का चचेरा भाई था. उसके हाथ में एक बड़ा धनुष था.

"बहुत अच्छा हुआ, भाई.
तुमने मेरा हंस खोज निकाला है!"

"यह हंस तुम्हारा नहीं है," राजकुमार सिद्धार्थ ने उत्तर दिया. "वो जंगली है और केवल आकाश का है!"

"लेकिन मैंने उसे अपने तीर से मारा है!" चचेरे भाई ने कहा. "यह हंस मेरा है. कानून के हिसाब से वो मेरा है."

"यह कानून हो सकता है. लेकिन वो हंस अभी भी ज़िंदा है. मैं ठीक होने में उसकी मदद करना चाहता हूं."

चचेरा भाई बहुत गुस्सा हुआ. "मैंने इतनी बेवकूफी की बात पहले कभी नहीं सुनी!"

"ठीक है," सिद्धार्थ ने चुपचाप कहा, "चलो हम राजा और उनके बुद्धिमान मंत्रियों के पास जाते हैं. वे इस मसले को सुलझाने में हमारी मदद करेंगे."

अध्याय 4

कोर्ट में बड़ी बहस हुई.

देवदत्त ने कहा, "अगर मैं किसी जानवर को मारता हूं, तो कानून के अनुसार वो मेरा होगा."

राजा के मंत्रियों ने उसकी बात मानी.

फिर सिद्धार्थ ने अपनी बात रखी. "वो तब ठीक होगा अगर पक्षी मर चुका हो! पर यह हंस तो अभी भी ज़िंदा है." फिर किसी को समझ में नहीं आया कि अब वे क्या करें?

अचानक, दरवाजे पर एक बूढ़ा व्यक्ति दिखाई दिया.

"काश, हंस बोल सकता?" बूढ़े आदमी ने कहा. "फिर हंस यह कहता कि वो फिर से ठीक होना चाहता है. कोई भी जीव दर्द से मरना नहीं चाहता है. हंस को उसी व्यक्ति के पास जाना चाहिए जो उसे जीवन दे."

राजा बोला, "यह बड़ी समझदारी की बात है. लेकिन दोनों लड़कों को हंस की देखभाल करने दो!"

अध्याय 5

आखिर देवदत्त ने यह महसूस किया कि जानवरों को भी दर्द होता था. वो हंस की देखभाल के लिए सिद्धार्थ की मदद करने को तैयार हुआ. जल्द ही हंस फिर से ठीक हो गया.

एक शाम, वे महल की झील के पास टहल रहे थे, तब उन्हें एक अजीब, तेज़ आवाज़ सुनाई दी.

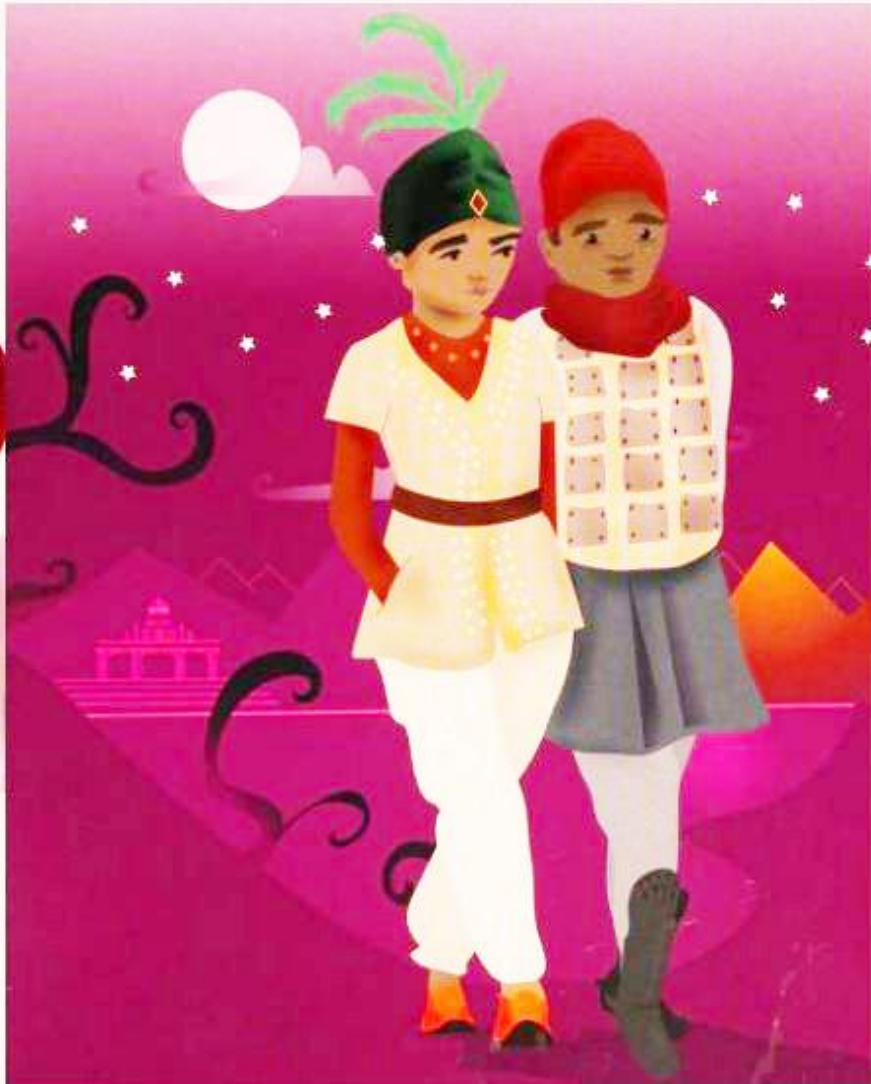

"देखो!" देवदत्त ने कहा. उसने आसमान की ओर इशारा किया. "दूसरे हंस उसे वापस लेने के लिए आए हैं!"

ठीक हुए हंस ने उन्हें देखकर अपने पंख फड़फड़ाने की कोशिश की.

धीरे-धीरे, वो हंस हवा में उठा और
शाम के आसमान में विलीन हो गया.

सिद्धार्थ और उसके चचेरे भाई ने देखा
कि हंस पहाड़ों की ओर उड़ गया था.

वर्षों बाद, राजकुमार सिद्धार्थ, बुद्ध बना. बुद्ध ने लोगों को सभी जीवित प्राणियों के प्रति दयालु होना सिखाया.